



नवनीत कुमार

बिहार

किन्नर

वैभव परीक्षा देने दिल्ली जा रहा था. उसके बगल वाले सीट पर दो लड़के बैठ हंसी मजाक कर रहे थे. तभी उसी बोगी में एक किन्नर आयी उसको देख कर लग रहा था उसकी तबियत ठीक नहीं थी. कुछ देर तक खड़े रहने के बाद सामने वाले लड़कों को बोली भैया थोड़ा सा सीट दे देते तो हम भी बैठ जाते. तभी एक लड़के ने हँसते हुए कहा अरे भाई अब तो हिजड़े को भी सीट चाहिए. तभी दूसरे लड़के ने कहा हां भाई इन हिजड़ों के कारण आजकल तो ट्रेन में भी आराम से सफर नहीं कर सकते. दोनों लड़कों की बातें सुनकर किन्नर की आँखें भर गयी, उसने धीरे से कहा भाई किन्नर कहलो, हिजड़ा नहीं बोलो हमारी भी इज्जत है. ये सब देख वैभव से रहा नहीं गया उसने अपने पास बुलाकर उसे अपनी सीट पर बैठा लिया. और बड़े सरलता से पूछा तुम्हारा नाम क्या है? सरिता किन्नर ने कहाँ!

सरिता ने निराशा भरी शब्दों से हमसे पूछना चाही. आखिर समाज में हमें अलग तरीके से क्यों देखा जाता है. मैं भी एक इंसान हूँ, मैं भी जीना चाहती हूँ. हिजड़ा कह कर कोई बुलाता है तो बहुत बुरा लगता है. उसकी बातें सुन वैभव से रहा नहीं गया. और पूछने लगा, क्या आपका घर परिवार नहीं है? घर है परिवार है माता-पिता, भाई-बहन सब हैं. सब होने के बाद भी हमें ये समाज उनके साथ रहने नहीं देता है. समाज के डर से हमें अपना घर छोड़ना पड़ता है. सरिता ने वैभव से कहीं!

वैभव सरिता की जीवन के बारे में और जानना चाहता था. उसने फिर सवाल किया! क्या तुम्हें पढ़ना पसंद नहीं था?

बिल्कुल पढ़ना पसंद था. मैं वैज्ञानिक बनना चाहती थी. मेरी भावनाएं भले ही लड़कियों की तरह थी पर मेरी बद्धि विज्ञान के विधार्थी की तरह थी. पता नहीं ईश्वर ने ऐसा क्यों मुझे बनाया न मैं इधर की बन सकी और न ही मैं उधर की बन सकी. मुझे समाज से ज्यादा कुछ नहीं चाहिए बस थोड़ी सी इज्जत हमें भी मिले. हमें भी अपना समाज का हिस्सा समझा जाए. आखिर ईश्वर ने हमारे साथ अन्याय क्यों किया? सरिता इतना कहकर रोने लगी. वैभव को कुछ समझ नहीं आ रहा था कि वो सरिता को क्या जवाब दे. वैभव सोचने लगा तभी उसका स्टेशन आ गया, और उसने सरिता को दिलासा दिलाते हुए उतर गया. परीक्षा दे कर वैभव घर आ गया लेकिन उसके दिमाग में सरिता का दर्द भरी दास्तां घूम रहा था वो बेचैन था. सारे सवाल का जवाब जानने को पर पूछे किससे यही समझ नहीं आ रहा था. तभी उसके दादा जी दिखाई दिए।

वैभव ने तुरंत उनसे सवाल किया! दादा जी क्या किसी का लिंग उसकी बुद्धिमत्ता का परिचायक हो सकता है. 'बिल्कुल नहीं' दादा जी ने वैभव से कहा!

तो फिर क्यों किन्नरों के साथ अन्याय किया जाता है? हम क्यों उन्हें अपने से दूर सामाजिक दायरे से बाहर हाशिये पर रखते चले आ रहे हैं? उनके प्रति हमारी सोच में अश्लीलता का चश्मा क्यों चढ़ा रहता है? उन्हें समाज की मुख्यधारा से क्यों अलग रखा जाता है? वैभव का सवाल सुन उसके दादा जी सोचने पर मजबूर हो गए. उनके पास वैभव के किसी भी सवाल का जवाब नहीं था. वो बस वैभव का चेहरा निहारते रह गए।